|| शनि जयंती व्रत कथा ||

PDF Created By : www.janbhakti.in

शनि जयंती पर शनि देव की पौराणिक कथा इस प्रकार है:

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, शनिदेव (Lord Shanidev) ने भगवान शिव (Lord Shiva) की कठोर तपस्या और भक्ति से नवग्रहों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। एक बार जब सूर्यदेव अपनी पत्नी छाया के पास गर्भाधान के लिए गए, तो छाया ने सूर्य के तेज से डरकर आँखें बंद कर ली। बाद में छाया के गर्भ से श्याम वर्ण वाले शनिदेव का जन्म हुआ। शनि के काले रंग को देखकर सूर्य ने छाया पर शनि को अपना पुत्र न मानने का आरोप लगाया। तभी से शनि अपने पिता सूर्य से शत्रुता रखते हैं।

PDF Created By : www.janbhakti.in

कई वर्षों तक भूखे-प्यासे रहकर शिव की आराधना और घोर तपस्या करने पर शिव ने प्रसन्न होकर शनि को वरदान मांगने को कहा। शनि ने प्रार्थना की कि उनकी मां छाया को सूर्य द्वारा सदा अपमानित किया गया है, अतः वे अपने पिता से भी अधिक शक्तिशाली और पूज्य बनना चाहते हैं। तब शिव ने वरदान दिया कि नवग्रहों में शनि का स्थान सर्वश्रेष्ठ होगा और वे पृथ्वी के न्यायाधीश व दंडाधिकारी होंगे। देवता, असुर, सिद्ध, विद्याधर और नाग भी शनि के नाम से भयभीत रहेंगे। ग्रंथों के अनुसार शनिदेव कश्यप गोत्रीय हैं और सौराष्ट्र उनका जन्मस्थल माना जाता है। शनि जयंती या प्रत्येक शनिवार को विशेष मंत्रों का जाप करने से यश, सुख, समृद्धि, सफलता और अपार धन-धान्य मिलता है।

PDF Created By : www.janbhakti.in